केन्द्रीय विद्यालय संगठन, लखनऊ सम्भाग

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN, LUCKNOW REGION

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

e-Book

केन्द्रीय विद्यालय संगठन,लखनऊ संभाग

मुख्य संरक्षक

श्रीमती निधि पाण्डेय

आयुक्त,के.वि.सं.,नई दिल्ली

मार्गदर्शक

डॉ. (श्रीमती) वी. विजयलक्ष्मी

अपर आयुक्त(शैक्षिक)

के.वि.सं.,नई दिल्ली

डॉ. ई.प्रभाकर

संयुक्त आयुक्त(प्रशासन)

के.वि.सं.,नई दिल्ली

श्रीमती पिया ठाकुर

संयुक्त आयुक्त(शैक्षिक)

के.वि.सं.,नई दिल्ली

श्री पी.के. कौल

संयुक्त आयुक्त(कार्मिक)

के.वि.सं.,नई दिल्ली

श्री एन. आर. मुरली

संयुक्त आयुक्त(प्रशिक्षण)

के.वि.सं.,नई दिल्ली

संरक्षक

श्री देवेन्द्र कुमार द्विवेदी

उपायुक्त, के.वि.सं.

लखनऊ संभाग

परामर्शदात्री समिति

श्री टी.पी.गौड़

सहायक आयुक्त

के.वि.सं.,लखनऊ संभाग

डॉ. अनुराग यादव

सहायक आयुक्त

के.वि.सं.,लखनऊ संभाग

ई पत्रिका समन्वयक

श्रीमती प्रीती सक्सेना

सहायक आयुक्त

के.वि.सं.,लखनऊ संभाग

संपादन

1.श्री घनश्याम पाण्डेय,प्राचार्य,केंद्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल बी.के.टी, लखनऊ

2. श्रीमती धान्या वी. पीजीटी अंग्रेजी, केंद्रीय विद्यालय RDSO, लखनऊ

3. श्री राकेश कुमार गुप्ता, पुस्तकालयाध्यक्ष, केंद्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल बी.के.टी, लखनऊ

4. श्रीमती सना अनवार, पुस्तकालयाध्यक्ष, केंद्रीय विद्यालय सी.आर. पी. एफ. बिजनौर, लखनऊ

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख का शीर्षक	लेखक	पृष्ठ क्र.
1.	नया कल नया संकल्प (पद्य)	नैवेद्य शुक्ला	(1)
2.	कोविड-१९ के दौरान हुई ऑनलाइन कक्षाओं का मेरा अनुभव	नितेश वर्मा	(2)
3.	मिलकर कोरोना को हराना है	अणिमा गुप्ता	(2)
4.	कोरोना वायरस के समय-काल में महिलाओं की स्थिति	वंदना मिश्रा	(3-4)
5.	कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा का अनुभव	मरियम खान	(5)
6.	ट्वीट	सोनी	(5)
7.	कोरोना वायरस आया	भाविका भृगु	(6)
8.	करोना काल में स्वछंदता का महत्व	अभिनन्दन ठाकुर	(6)
9.	चंद रोज की बात है	अनुभव सिंह	(7)
10.	आया था संकट एक विकराल, मचाया था उसने विश्व भर में बवाल	वैष्णवी शुक्ला	(8)
11.	कोरोना को हराना है	अंकुर मिश्रा	(9)
12.	मैं क्यों भारत देश में आया	चंद्रप्रभा फौजदार	(9)
13.	ऑनलाइन शिक्षण: एक अनुभव	अंशिका पाण्डेय	(10)
14.	मेरा अनुभव.......	मुस्कान राजपूत	(10)
15.	किस्सा परीक्षा का	रजत कुमार सागर	(11)
16.	आशाओं के दीप	कु. आयुषी	(12)
17.	Tweet Message	Anshuman Singh	(13)
18.	LOUSY LOCKDOWN LANES….	Yashika Sharma	(14)
19.	Pandemic Experience	Raunak Singh	(15)
20.	A PUZZLE	Anugya Singh	(16)
21.	PHOENIX: TO RISE FROM THE ASHES…..	Minza Khan	(17-18)
22.	WITHIN 18 DAYS	Aastha Mehra	(19)
23.	My experiences during COVID-19	Akshunn Pathak	(20)
24.	Experience During Covid Era	Hemang Saxena	(20)
25.	The War Fought with Invisible Ammunition	Uzaid Ullah Khan	(21)
26.	The Times of school	Anuj	(22)
27.	COVID-19 PANDEMIC	Mahi Sharma	(23)
28.	Learning Experience during Covid -19	Abdullah Usmani	(24)
29.	CORONA: CURSE OR BOON	Pankaj Kumar	(25)
30.	Learning Experience in View of COVID-19 Pandemic	Meenakshi	(26)

नया कल नया संकल्प

अभी तो एक महामारी है दुनिया में मौजूद

जिसके कारण से खतरे में है मानुष का वजूद|

नजरबंद हैं सब मानव, तरक्की हुई धीमी

बंद है सभी विद्यालय ,कैसे हो पढ़ाई पक्की ?

डरो नहीं, शिक्षा के क्षेत्र में आई है क्रांति व्यापक,

अब मोबाइल से घर पर ही हैं पुस्तकें और अध्यापक।

घर ही बनेगा विद्यालय अब तकनीकी उपकरणों से,

सीखा हमने आगे बढ़ना अतीत के संस्मरणों से,

हाँ, इसमें नहीं विद्यालय वाले गलियारों-सी हलचल,

पूछो इससे, क्यों गोल धरा अब हमको दिखती समतल।

होती मशीन पर परीक्षाएँ और पूरे होते चैप्टर भी,

अब बिजली और इंटरनेट से ही घर पर आते मास्टर जी,

रोज सुबह मोबाइल पर ही आ जाता है विद्यालय,

सीखो विज्ञान,गणित एवं कितना भव्य हिमालय।

आरंभ है यह एक नए दशक का, मुश्किल हैं हालात,

हाँ, मानव तो है दूर, मगर है मानवता तो साथ

डटकर करेंगे सामना चाहे आए मुश्किल अपार

बल बनकर एक दूजे का, कर लेंगे यह समय पार।|

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

प्रस्तुति-

नैवेद्य शुक्ला

ग्यारहवीं (विज्ञान)

केन्द्रीय विद्यालय,

वायुसेना स्थल बरेली

कोविड-१९ के दौरान हुई ऑनलाइन कक्षाओं का मेरा अनुभव

हम सब अपनी ज़िन्दगी जी रहे थे खुशहाल ,
खेल –कूद और पढ़ाई से दिन बीतते थे बेमिसाल ,
फिर अचानक से आ धमका जीवन में कोरोना काल,
सोचा था कुछ समय के लिए ठहरना है, फिर सब ठीक हो जायेगा,
हमें ना पता था ये हम सभी के जीवन में कुंडली मार कर बैठ जायेगा,

इसके आने पर हुई थोड़ी हैरानी सी थी,
शुरू होने वाली ज़िन्दगी में एक नयी कहानी थी,
कभी जो कक्षाएं हम विद्यालय में जाकर लेते थे,
वो कक्षाएं अब ऑनलाइन होने वाली थी,
पाठ्यक्रम पूरा ना होने का डर सा था,
ऑनलाइन कक्षाएं लेने का मन न था,
आखिरकार कक्षाएं लेने का मन बना ही लिया था,
पढना ज़रूरी है ये मन को समझा ही लिया था,

कोशिश पढ़ने की पूरी थी, लेकिन इस पढाई में कुछ बात अधूरी सी थी,
कभी नेटवर्क कमज़ोर हो जाता था,
तो कभी शिक्षक की आवाज़ न आने पर,
कोई टॉपिक समझ नहीं आ पाता था,
शिक्षक को एक ही टॉपिक दो-तीन बार समझाना पड़ता था,
फिर भी किसी ने अपनी हिम्मत तोड़ी न थी,
मन लगाकर पढ़ने की कोशिश छोड़ी न थी ,

भरोसा पूरा था हमारे वैज्ञानिकों पर,
इस महामारी का कोई इलाज़ जरूर आएगा,
कोरोना का काला साया जल्दी ही छँट जाएगा,
एक बार फिर हम विद्यालय जा पायेंगे ,
अपने दोस्तों और शिक्षकों से दोबारा मिल पाएंगे।

द्वारा:- नितेश वर्मा कक्षा -12 'अ' "मानविकी"
केंद्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल मेमौरा, लखनऊ

मिलकर कोरोना को हराना है।

मिलकर कोरोना को हराना है।
बच्चे हों या बूढ़े सब को जागरुक बनाना है,
हाथ किसी से नहीं मिलाना है,
चेहरे पर हाथ नहीं लगाना है,
हर दो दो घंटे में-20 सेकंड तक हाथ में धोना है।
मिलकर कोरोना को हराना है,
बचाव ही इलाज है, यह आज हमें समझाना है,

द्वारा -:
अणिमा गुप्ता कक्षा -4 'अ'
केंद्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल बीकेटी, लखनऊ

कोरोना वायरस के समय-काल में महिलाओं की स्थिति

अब इतिहास में दर्ज होगा एक ऐसा समय,
जब संसार हो गया निश्चल,
जब सपरिवार रहे भीतर,
कभी-कभी खिड़कियों से झाँकते,
उस साफ होते आसमान को देखते,
जो इतना नीला कभी न था,
जो उन्होंने बरसों से ना देखा था,
वह फूलों का खिलना,
वह सूरज का निकलना,
वह बादलों का आना-जाना,
और हां, वह रंग बिरंगा इंद्रधनुष,
जिसकी आभा को न जाने कब से नहीं देखा था ॥

जी हाँ, नोवेल कोरोना वायरस का समय.......ऐसा वायरस जिसने सारे संसार की गति को,रफ़्तार को, सोच को, महत्वाकांक्षाओं को, और यूँ कहें तो जीवन को ही एक पल में रोक दिया....इसके संक्रमण से बचने के लिए पहले लॉकडाउन और फिर अनलॉक 1,2,3,4,5...आज छह महीने से भी अधिक अवधि बीत चुकी है पर अब तक हम सामान्य जीवन की परिकल्पना से भी कोसों दूर हैं। इस वैश्विक महामारी के कारण वैश्वीकृत समाज की एक दूसरे के साथ मज़बूती से जुड़ी हुई प्रणालियां पूरी तरह से बदल गई, और परिवार इसी समाज की सबसे छोटी और महत्वपूर्ण इकाई है। इस वायरस के प्रकोप पर काबू करने के प्रयास के तौर पर कहीं आने-जाने तथा सामाजिक मेल-जोल पर बंदिशें लग गई जिसके कारण दुनिया की 7 बिलियन से भी अधिक की आबादी इस समय इस महामारी के कारण एक तरह से अपने घरों में बंद रहने को मजबूर है।

दुनिया के कई हिस्सों में, सीमाएं बंद हैं, हवाई अड्डे, होटल और व्यवसाय बंद हैं, और शैक्षणिक संस्थान बंद हैं। ये अभूतपूर्व उपाय सामाजिक ताने-बाने को तोड़ रहे हैं और अर्थव्यवस्थाओं को बाधित कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप विश्व पर दूरगामी प्रभाव दिखने लगे हैं | पर यह समय अभूतपूर्व है, आज शत्रु अनजाना, अनदेखा और विलक्षण है। फिर भी महिलाओं ने धैर्यपूर्वक इस संकट का सामना किया है और आज भी कर रही हैं, फिर चाहे वे गृहिणियाँ हों या नौकरीशुदा महिलाएँ, चाहे वे गाँवों में निवास करती हों, या शहरों में, चाहे वे निर्धन परिवारों से हों या धनाढ्य परिवारों से। महिलाओं ने समाज की इस बदली हुई तस्वीर के साथ सामंजस्य बैठाने का भरपूर प्रयास किया है।

आइए सब से पहले गृहिणियों की बात करते हैं। लॉकडाउन में बाहर सब कुछ बंद है तो सबको घर पर ही रहने की मजबूरी है| बच्चे स्कूल में जा नहीं रहे उन्हें या तो घर पर पढ़ाओ या ऑनलाइन कक्षाओं का प्रबंध करो या नई–नई चीजें बनाकर खिलाते रहो या मनोरंजन का ध्यान रखो, नहीं तो वे उधम मचायेंगे। घर में बुज़ुर्ग हैं, तो उनकी देखभाल अलग, उन्हें तो कोरोना का सबसे ज्यादा खतरा है।

बड़े आराम से घर में कोरोना से बचाव के लिए घर वालों ने तय कर दिया कि हाउस हैल्प और काम करने वाली बाई को मत आने दो। फिर खाना बनाने, बर्तन मांजने, झाड़ू चौका, कपड़े धोने का काम सब महिलाओं पर ही आ गया। यह भी सच है कि घर के सद्स्य मदद के लिए आगे आते तो हैं परंतु वह पर्याप्त नहीं होता।

इसके साथ ही जो बात सबसे अधिक चिंतनीय है, है,वह यह कि कोरोना संकट के दौरान देश-विदेश से महिलाओं के ख़िलाफ़ बढ़ती घरेलू हिंसा की ख़बरें आ रही हैं. कोरोना के बढ़ते मामलों के बीच घर में बंद रहने के अलावा कोई चारा भी नहीं है. मनोचिकित्सकों के मुताबिक कोरोना जैसी महामारी के दौरान इंसानी फितरत में बदलाव आना या पहले से पनप रही हिंसा का बढ़ जाना आम बात है इसलिए भी कि आम लोगों को सिर्फ शारीरिक बंदिश नहीं आर्थिक दिक्कतों का सामना भी करना पड़ रहा है. आवश्यक स्वास्थ्य सेवाओं के बाधित होने से महिलाओं और लड़कियों तक इन सेवाओं की पहुंच कम हो जाने का खतरा बढ़ गया है। कोरोना वायरस संकट से हमारी सामाजिक सेवाओं और स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली पर अभूतपूर्व दबाव पड़ा है। इसके साथ ही महिलाओं के खिलाफ यौन और घरेलू हिंसा, उनकी स्वास्थ्य सेवाओं में व्यवधान, गर्भ निरोधकों की आपूर्ति में

बाधा का भी खतरा बढ़ गया है। महिलाओं में मानसिक तनाव और चिंता संबंधी जोखिम भी बढ़ रहा है।

लॉकडान के इन नकारात्मक पहलुओं के साथ अनेक सकारात्मक पहलू भी हैं, जिनपर हमारे लिए ध्यान देना आवश्यक है। कोरोना वायरस के तमाम नकारात्मक प्रभावों के बीच कुछ छोटे ही सही लेकिन ऐसे सकारात्मक बदलाव भी हैं जिनकी भारतीय समाज को एक अरसे से जरूरत थी। कोरोना संकट सिर्फ दुनिया की आर्थिक व्यवस्था को ही नहीं बल्कि राजनीति, देशों के आपसी संबंधों से लेकर हमारे सामाजिक-व्यक्तिगत संबंधों तक को बदलने वाला साबित हो रहा है.आशंकाओं के बीच कुछ छोटे-छोटे सकारात्मक बदलाव भी हैं, जिन्हें पिछले दिनों भारतीय समाज ने बहुत गंभीरता और तेजी के साथ अपनाया है।

आज घर-घर में स्वच्छता, अनुशासनबद्धता, धैर्य, कम सामान में गुज़ारा करना,खाने की बर्बादी को न होने देना, घरवालों के महत्व को सब जानने लगे हैं और आज जब घर की हेल्प या काम वाली बाई नदारद है, तो धीरे धीरे घर के सदस्य महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों को न केवल नोटिस करने लगे हैं बल्कि स्वयं आगे बढ़कर मदद भी कर रहे हैं। अपने लोगों के करीब रहना, एक सोशल सर्कल का होना और जिंदगी आसान बनाने वाले कई लोगों की उपस्थिति हमारे लिए कितनी ज़रूरी है., ये बात परिवार के सभी सदस्यों को अच्छी तरह समझ आ रही है| अन्यथा महिलाओं के लिए विशेष तौर से किशोर होते बच्चों को यह समझाना अत्यधिक कठिन हो जाया करता था। कोरोना संकट ने हमें अपने हाथों को साफ रखना सिखा दिया है. कोरोना संकट अभी लंबा चलने वाला है और उम्मीद की जा सकती है कि इसके खत्म होने तक हाथों से लेकर घर तक की साफ-सफाई हम में से कइयों के जीवन का एक स्थायी अंग बन चुकी होगी, और इससे महिलाओं के लिए घर के रख-रखाव में अवश्य ही मदद मिलेगी। कोरोना वायरस के इस आपातकालीन समय में महिलाओं ने अपनी छुपी हुई प्रतिभाओं के विकास के लिए समय निकाला है और घर के बच्चों, जो वर्क फ्रॉम होम के कारण घर में ही है, नई तकनीकों की मदद से सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी क्रिएशंस का प्रदर्शन भी किया है।

महिलाओं में टेक्नोलॉजी के प्रयोग में महिलाएं अब आगे आ रही है वे आत्मनिर्भर होकर ऑनलाइन शॉपिंग और सोशल मीडिया में अपनी क्रिएशंस और अपने कौशल का प्रदर्शन कर रही है इसके साथ-साथ यूट्यूब पर देख कर विभिन्न व्यंजनों और पकवानों को भी बना रही है कुछ महिलाओं ने संगीत, चित्रकला आदि को फिर से अपनाया है इससे महिलाओं का व्यक्तित्व निखर रहा है घर के पुरुषों में और घर के अन्य सदस्यों में उनके प्रति सम्मान भी बड़ा है उनकी योग्यताओं को उनके कौशलों को घर में और सोशल मीडिया पर सराहा जा रहा है पहुंची महिलाओं के ब्लॉग बहुत ही लोकप्रिय हो रहे हैं चाहे वे व्यंजनों और पकवानों को बनाने के विषय में हो या बच्चों की देखभाल के विषय में हो।इन घरेलू विषयों पर जब महिलाओं ने लिखना आरंभ किया है तो उन्हें बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हो रही है। आमतौर पर अपने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही बरतने वाली महिलाएँ अब योग और ध्यान की ओर आकर्षित हो रही हैं। किसी भी मनुष्य के लिए सबसे आवश्यक होता है कि उसके परिवार वाले उसकी योग्यताओं उसके कौशलों की सराहना करें और समाज में उसे एक पहचान मिले तो कोरोनावायरस का यह काल एक प्रकार से महिलाओं को पहचान दिलवाने का भी एक समय और एक अवसर रहा है|

मैं ऐसा मानती हूँ कि कोरोनावायरस के इस मंथन काल से निकला यह स्निग्ध पीयूष समाज को एक नई दिशा देगा अंत में यही कहा जा सकता है कि भारतीय महिला एक सशक्त व्यक्तित्व के रूप में उठेगी और उसके आत्मविश्वास से समस्त भारतीय समाज आलोकित होगा और एक नया पथ प्रशस्त होगा क्योंकि-इन काली सदियों के सर से जब रात का आँचल ढलकेगा|

जब दुख के बादल पिघलेंगे, जब सुख का सागर छलकेगा
जब अंबर झूम के नाचेगा, जब धरती नग़में गाएगी
वो सुबह हमीं से आएगी, वो सुबह हमीं से आएगी
वो सुबह हमीं से आएगी, वो सुबह हमीं से आएगी

द्वारा
कु. वंदना मिश्रा
कक्षा 12 स

"कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा का अनुभव"

ऑनलाइन कक्षा एक वरदान है,

कोरोना को जवाब है।

ना रुकेंगे हम,ना थकेंगे हम,

भारत के भाग्य विधाता बनेंगे हम|

ऑनलाइन कक्षा आज की सबसे बड़ी जरूरत बन गई है, आज की शिक्षा पूरी तरह से ऑनलाइन कक्षा पर निर्भर हो गई है| आज जब चारों तरफ वैश्विक महामारी कोरोना का प्रकोप फैला हुआ है, ऑनलाइन कक्षा अंधेरे में रोशनी की तरफ उभर कर आई है| यह वह रोशनी कि किरण है जिसके सहारे हम अपनी शिक्षा की नैया को पार लगा रहे हैं| ऑनलाइन कक्षा की वजह से ही आज हम शिक्षा में नहीं पिछड़े हैं| हम घर पर ही रहकर डिजिटल (मोबाइल लैपटॉप) तरीके से पढ़ाई कर रहे है| कोविड-19 महामारी के प्रकोप से बचने के लिए सरकार द्वारा जब पूरे देश में लॉकडाउन की स्थिति उत्पन्न हुई उसके पश्चात पूरे देश में सभी शैक्षिक संस्थानों को भी बंद करना पड़ा जिसकी वजह से शिक्षा पर बुरा प्रभाव पड़ा| सभी अपने घरों में बंद हो गए थे, ऐसी स्थिति में ऑनलाइन शिक्षा ही ऐसी माध्यम था जिसकी वजह से शिक्षा को वापस शुरू किया गया तथा प्रत्येक बच्चे तक पहुंचाया गया|

द्वारा
मरियम खान
कक्षा: 6 स
केन्द्रीय विद्यालय आर. आर. सी. फतेहगढ़

ट्वीट

मेरे ऑनलाइन कक्षा का अनुभव बहुत अच्छा था, शुरुआत में व्हाट्सएप ग्रुप पर ऑनलाइन कक्षा लेने में कुछ दिक्कतें आयीं क्योंकि ऑनलाइन कक्षा कभी नहीं की थी और शुरुआती दौर में फोन के सामने बैठे रहने से सिर में दर्द भी महसूस हुआ पर बाद में सब अच्छा हो गया। बाद में ऑनलाइन कक्षा गूगल मीट पर चलने लगी। अब तो ऑनलाइन कक्षा ऐसे लगती है जैसे विद्यालय मंऑ कक्षाएं चलती हों। हमारे शिक्षक हमें गूगल मीट पर बहुत अच्छे से पढ़ाते हैं जिससे घर पर पढ़ाई करने में आसानी हो जाती है। ऐसे ही पढ़ते- पढ़ते हमारा पाठ्यक्रम भी पूरा हो गया है।

द्वारा – सोनी (कक्षा- 10 'अ')
केन्द्रीय विद्यालय बलरामपुर

कोरोना वायरस आया

कोरोना वायरस आया, कोरोना वायरस आया
हम सब के लिए मुसीबत लाया
छोड़-छाड़ के खेल सुहाने, हम सबको घर में बिठाया
ना स्कूल गए, ना गए मैदान,
पूरा साल घर में रहे और बन गए शैतान,
कभी मां का गुस्सा, तो कभी मां का दुलार पाया।
कोरोना वायरस आया, कोरोना वायरस आया

खाली रह गए बाग़-बगीचे, खाली रह गए झूले
घर में बंद रह कर बच्चे, पढ़ना लिखना भी भूले
लेकिन मम्मी पापा के फोन ने खूब साथ निभाया,
ऑनलाइन कक्षा से जुड़कर, बच्चों ने शिक्षा का पूरा लुत्फ उठाया।
कोरोना वायरस आया, कोरोना वायरस आया

धन्य है हमारे गुरुजन जिन्होंने मेहनत कर हमें ऑनलाइन पढ़ाया
जिनकी वजह से ही हमने, घर पर रहकर सारा ज्ञान पाया।

कोरोना वायरस आया, कोरोना वायरस आया

द्वारा
भाविका भृगु
कक्षा - द्वितीय स
केन्द्रीय विद्यालय आर. आर. सी. फतेहगढ

करोना काल में स्वछंदता का महत्व

मुझे नहीं पता था कि कभी ऐसा भी होगा कि मैं अपने घर में कैद हो जाऊंगा पर ऐसा हुआ और मैं सिर्फ अपने ही घर में कैदी नहीं रहा बल्कि सारी दुनिया ही अपने अपने घर में कैद हो कर रह गई तब स्वतंत्रता का असली अर्थ मुझे समझ आया जब मैं अपने दोस्तों से मिलना चाहता था, उनके साथ खेलना चाहता था, अपनी दादी के घर जाना चाहता था पर हम सबको उस वक़्त खुद को सुरक्षित रखने के लिए खुद को घर पर ही कैद रखना था, वो पल मेरे जीवन का न भूलने वाला पल था पर उस वक़्त में इंटरनेट की वज़ह से मैं अपने मित्रों और दादी से जुड़ा रहा उस वक़्त उन्हीं का हौसला था जिससे मैं कभी हतोत्साहित नहीं हुआ और उस वक़्त मेरे सम्माननीय शिक्षकों ने ऑनलाइन शिक्षण के द्वारा हमें पढ़ाई से जोड़े रखा, समय समय पर ऑनलाइन प्रतियोगिताओं से भी कभी मुझे लगा ही नहीं कि मैं घर पर कैद हूँ पर आज जब हम सब मिल सकते है एक दूसरे को सामने देख सकते है तब गुज़रा पल याद कर स्वछंदतता का महत्व मुझे पता चलता है| उन सभी पलों के लिए मेरे परिवार और अध्यापकों के प्रोत्साहन का मैं सदैव ऋणी रहूँगा|

द्वारा - अभिनन्दन ठाकुर (कक्षा-6 ‘ब’)
केन्द्रीय विद्यालय,वायुसेना स्थल बी.के.टी लखनऊ

चंद रोज की बात है

चंद रोज की बात है यारों
चंद रोज की बात।
अनदेखा दुश्मन हारेगा,बीतेगी यह रात है।
सब आवाज एक करें,आओ हिम्मत को जोड़ें।
दिल में उगाई है जितनी,सब दीवारे तोड़े।

रुख अपनी हर कोशिश का,बेबस की तरफ मोड़ें।
फ़िक्र किसी पेशानी पर,ना आंख में आंसू छोड़े।
हाथ में जो हाथ नहीं तो क्या,छूटे ना यह साथ।
चंद रोज की बात है यारों,
चंद रोज की बात।

अगर देखना है रब को,तो देख लो तुम उन सबको।
खुद खतरे में है,उम्मीद बांट रहे हैं हमको।
खड़े मुकाबिल मौत के,ना एक पल को भी डरते हैं।
सजदा है इनको बार-बार,हम सौ सलाम करते हैं।
इन्हें हौसला देकर हम मुश्किल को देंगे मात।
चंद रोज की बात है यारों,
चंद रोज की बात।

तमिल ,तेलुगू ,मलयालम ,बंगाली ,भोजपुरी हो,
तुलु ,मराठी ,पंजाबी, गुजराती, या आसामी हो।
विंध्य- हिमाचल -यमुना -गंगा सब का है यह नारा,
जीतेगा कोरोना से यह हिंदुस्तान हमारा।
घर में रहकर मुल्क को देंगे जीत की सौगात,,
चंद रोज की बात है यारों,
चंद रोज की बात।

द्वारा-
अनुभव सिंह कक्षा- 10 'द'
केन्द्रीय विद्यालय चकेरी क्र. 1 - कानपुर

आया था संकट एक विकराल, मचाया था उसने विश्व भर में बवाल

कैसे बचना इससे सबके मन मे था बस यही सवाल,
थे हम इस नए संकट से अनजान,
रुक गया था हमारा सारा काम।
इसके आने से देश भर में मायूसी छायी,
जैसे एक आंधी काली घटा घेर लायी,
किसी की माँ किसी के पिता किसी की बहन तो किसी के भाई,
फिर भी न डरेंगे तुमसे,
क्योंकि चिकित्सा पद्धति सबसे पहले भारत मे आयी।
चिकित्सकों ने पहले भी है बीमारियों से जीता,
अब अथक ज्ञान सागर से कोरोना जंग भी जीत लेंगे,
वैज्ञानिकों ने पहले भी परमाणु बम बना देश की सीमाएं जीती,
अब कोरोना का टीका बनाने का जंग भी जीत लेंगे,
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई होने पर भी एकता जीती,
अब धर्म को कर्म से ऊपर रखकर यह जंग भी जीत लेंगे।
कोरोना तुमने दुनिया रोकी तुमने देश रोका,
जहाज विमान के साथ तुमने रेल भी रोका,
रोकी स्कूल कॉलेज यूनिवर्सिटी की पढ़ाई,
इन विद्यार्थियों पर क्या तुम्हें जरा भी दया न आई,
दुनिया भर में मचा कर तबाही,
तुझे जरा भी शर्म न आई।
लोगों को घरों में बंद किया है तुमने,
अपनों को अपनों से दूर किया है तुमने,
गरीबों की गरीबी बढ़ायी है तुमने,
इनको रोटी-रोटी का मोहताज बनाया है तुमने,
इनको न जाने कितना दूर तक पैदल चलवाया है तुमने,
पर अब तुम्हें हराने के प्रण लिया है हमने।
हमारे डॉक्टर नर्सेज और मेडिकल स्टाफ,
करते रहेंगे कोरोना मरीजों का उपचार,
न थकेंगे न रुकेंगे,
होता रहे चाहे जितना भी लॉकडाउन का विस्तार,
करते रहेंगे हम तुझ पर सैनिटाइजर का प्रहार,
धुलेंगे अपना हाथ हम बार बार,
रहेगा हरपल तेरे खत्म होने का इंतज़ार।
कोशिश की तुमने बहुत बिगाड़ न पाया हमारा कुछ,
क्योंकि हमारे सामने है तू तुच्छ।

द्वारा -वैष्णवी शुक्ला (कक्षा 10वीं अ)
केन्द्रीय विद्यालय बलरामपुर

कोरोना को हराना है

मिलकर करोना को हराना है,
घर से बाहर नहीं जाना है,
हाथ किसी से नहीं मिलाना है,
मिलकर कोरोना को हराना है।
सैनिटाइजर उपयोग में लाना है,
हाथ साफ रखना है,
मुंह पर हाथ नहीं लगाना है,
मिलकर कोरोना को हराना है।
सामाजिक स्थानों पर नहीं थूकना है,
सामाजिक चीजों को नहीं छुना है,
जनता कर्फ्यू का पालन करना है,
मिलकर कोरोना को हराना है।
आवश्यकता होने पर घर से बाहर जाना है,
मास्क जरूर लगाना है,
फिर घर आकर स्वयं को स्वच्छ करना है,
मिलकर कोरोना को हराना है।

नाम~अंकुर मिश्रा
कक्षा ~सातवीं- ब
केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल
बख्शी का तालब, लखनऊ

"मैं क्यों भारत देश में आया"

मैं क्यों भारत देश में आया ! व्यर्थ में आकर जोर लगाया !
लेकिन अब तक समझ न पाया ! मैं क्यों भारत देश में आया !

छीन लिए सब रोजगार ! ठप किये सारे कारोबार !
बचाव में लग गई सरकार ! जब - जब मैंने किया प्रहार !

सरकार ने कर दिया अलर्ट जारी ! घोषित हो गया मैं महामारी !
सारे जग को खूब छकाया ! पर भारत में हुआ न भारी !

सरकार ने सेफ्टी- नियम बनाये ! जनता ने वो सब अपनाये !
हर दम मुँह पर मास्क लगाये ! वेबजह न बाहर आये !

लग गया लंबा लॉकडाउन ! हो गया मेरा ब्रेकडाउन !
सिमट गया जब मेरा साया ! फिर भी मेरी समझ न आया !

मैं क्यों भारत देश में आया !

द्वारा - चंद्रप्रभा फौजदार
कक्षा :- छठवीं 'अ'
केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल
बख्शी का तालाब, लखनऊ

ऑनलाइन शिक्षण: एक अनुभव

" जरूरी नहीं रोशनी चिरागों से ही हो, शिक्षा से भी घर रोशन होते हैं "

आज कोविड-19 ने पूरे विश्व को अपने आगोश में ले लिया है। पूरा विश्व कोविड-19 के शिकंजे में फंस चुका है। कोविड-19 ने हर एक क्षेत्र को प्रभावित किया है। शिक्षा को रोकने की कोशिश की गई थी परंतु हम लोगों ने आपदा को अवसर बनाकर शिक्षा को एक नया रास्ता दिया। जहां कोविड-19 ने स्कूल जाने पर रोक लगवा दी उसी को करारा जवाब देते हुए हम लोगों ने घर में ही स्कूल खोल लिया अर्थात डिजिटल प्लेटफार्म का इस्तेमाल किया।

केंद्रीय विद्यालय संगठन तथा केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 अरमापुर कानपुर को शुक्रिया अदा करते हुए तथा सभी गुरुजनों का धन्यवाद करते हुए यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि हमने अपनी पढ़ाई को पीछे नहीं छोड़ा। व्हाट्सएप , गूगल मीट , दीक्षा, गूगल क्लासरूम, इत्यादि एप्स का इस्तेमाल करते रहे तथा अपनी पढ़ाई को साथ लेकर चलते रहे। शिक्षकों की मदद से हमें यह एहसास ही नहीं हुआ कि हम स्कूल में नहीं बल्कि घर में पढ़ रहे हैं। तकनीकी क्षेत्र में हम इतने आगे बढ़ चुके हैं की कोविड-19 क्या कोई भी चुनौती हमें रोक नहीं सकती। ऑनलाइन माध्यम से केवल हमारी पढ़ाई हुई बल्कि शारीरिक गतिविधियां भी हुई जैसे कि योगा, दौड़ना, वृक्षारोपण इत्यादि। ऑनलाइन शिक्षा में भी हमें बोलने का मौका मिला। स्वतंत्रता दिवस का भाषण हो या फिर कोई प्रतियोगिता कोविड-19 की वजह से कुछ नहीं रुका।

हालांकि ऑनलाइन शिक्षा में कुछ रुकावटें आई जैसे कि नेटवर्क की समस्या, हर जगह साधन ना उपलब्ध होना तथा तकनीकी इतनी जानकारी ना होना परंतु हमारे शिक्षकों को इसकी ट्रेनिंग दी गई तथा अधिक से अधिक पाठ्य हेतु सामग्री छात्र छात्राओं को उपलब्ध कराई गई। समय-समय पर माननीय प्रधानमंत्री तथा शिक्षा मंत्री ने बच्चों को प्रोत्साहित किया तथा ऑनलाइन शिक्षा के लिए अधिक साधन उपलब्ध कराए।

इन सभी का धन्यवाद करते हुए हम यह साबित कर सकते हैं कि भले ही कोविड-19 ने पूरे विश्व को अपने जाल में फंसा रखा है लेकिन हम भारतवासी किसी से नहीं डरते। आपदा में अवसर खोजने की हमारी कोशिश हमेशा कामयाब रहती है।

द्वारा
अंशिका पाण्डेय
कक्षा- 12 द
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक- १ अर्मापुर, कानपुर

मेरा अनुभव.......

साल 2020 हम सभी के लिए बड़ा मुश्किलों भरा रहा हैं। इस काल में कोरोना महामारी चीन के वुहान शहर से फैली, जिससे मनुष्य के बीच में 6 फीट की दूरी आ गई।इस कोविड-19 महामारी के कारण लाखों लोग अपनी जिंदगी खो चुके हैं।इस वायरस के कारण सामाजिक दूरी बनाए रखने के लिए सभी स्कूल, कॉलेज ,दफ्तर, दुकानें काफी लंबे समय तक बंद रहे।स्कूल बंद होने के कारण विद्यार्थियों की पढ़ाई में विलंब ना हो ,इसके लिए विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन क्लासेज आयोजित की गई ऑनलाइन क्लासेज में जुड़ कर पढ़ाई करना मेरे लिए बड़ा ही अनोखा अनुभव रहा ,हम सभी विद्यार्थियों ने कभी इस तरह नहीं पढ़ाई की थी।कभी-कभी नेटवर्क की परेशानी होने के कारण ऑनलाइन कक्षा में परेशानी आती थी, लेकिन हमारे शिक्षकों ने हमें काफी सहयोग किया।यदि किसी कारण से मैं या अन्य विद्यार्थी कक्षा में नहीं जुड़ पाते थे ,तो हमारे प्रिय शिक्षक हमें व्हाट्सएप ग्रुप पर पाठ पढ़ाया करते थे और कार्य भेज दिया करते थे।हमारी प्राचार्य और उपप्राचार्य भी विद्यार्थियों के साथ कभी-कभी गूगल मीट पर जुड़ती थी। हम सभी विद्यार्थियों को इस मुश्किल काल में मानसिक तौर पर एवं शारीरिक तौर पर स्वस्थ रखने के लिए निर्देश देती रहती थी।ऑनलाइन कक्षा के दौरान मै एक एकांत कमरे में बैठकर शिक्षक की बात ध्यान से सुनती थी ,अगर किसी को कोई परेशानी होती थी ,तो वह अपने विषय संबंधी शिक्षक को शाम 6:00 से 7:00 बजे फोन करके अपनी समस्याओं का निवारण कर लेता था।

द्वारा -- मुस्कान राजपूत (कक्षा - दस 'अ')
केन्द्रीय विद्यालय पूर्वोत्तर रेलवे, बरेली

किस्सा परीक्षा का ..

चला गया वो वक़्त,
जिसमे करते थे तैयार,
लिखना पड़ता बार बार,
तब प्राप्तांक आते तीन चार,
न समझाने की रोक टोक,
न लिखावट की कोई बंदिश थी,
कितना हुआ पूर्व कुछ मालूम नहीं,

बस था मतलब उत्तर से ही,
सुबह तडके जो मिले खबर,
करते इंतज़ार परीक्षा का,
खुलते ही फॉर्म जो उत्तर समझ आते,
सबसे पहले वही किये जाते,
दूसरा करते चिंतन मन में,
किस किस का ज्ञान है,
तीसरी बार में कोसते खुद को,
जो पढ़े न,

न कक्षा में ध्यान लगाते थे,
बस देखते देखते यू ट्यूब विडियो,
कैसे वक़्त बिताते थे,
कक्षा पढ़ाते शिक्षकों की,
यहाँ दोगुनी मेहनत होती थी,
आते जाते बच्चों की,
खबर चाहते हुए भी न मिलती थी,

कभी जुड़ते कभी हटते,
कभी नेटवर्क की वजह से,
कुछ कुछ अटक से जाते थे,
कुछ ऐसे ही ऑनलाइन कक्षा में,
हम अपना वक़्त बिताते थे,

बहुत मशक्कत से,
कुछ प्रश्नों का उत्तर मिल जाता था,
फिर बारी आती थी,
उन अंतिम कुछ सवालों की,
जिनके न अक्षर समझ आयें,
जो हमको नासमझ ज्ञात कराये,
उन चुनिन्दा सवालों के जवाब,
कुछ ऐसे ढूंढें जाते थे,

कभी कॉल , कभी व्हाट्सएप,
कभी बाबा गूगल उत्तर बतलाते थे,
एक घंटे की वो ऑनलाइन परीक्षा,
बस होने ही वाली पूरी थी,
२ मिनट शेष थे परीक्षा के,
तभी समय देखने फ़ोन में,
ऊपर से स्वाइप किया ही था,
घंटो पुरानी मेहनत के,
कुछ ऐसे लग जाते रस्ते थे,
फॉर्म के होते ही रिफ्रेश,
हम मन ही मन में डरते थे,
जो सांझा करते तकलीफ मित्र से,
वो मन ही मन में हँसते थे,
कुछ ऐसे ही हमारे,
ऑनलाइन परीक्षा के दिन कटते थे ..

द्वारा
रजत कुमार सागर
कक्षा १२ अ (प्रथम पाली)
केंद्रीय विद्यालय अलीगंज लखनऊ

आशाओं के दीप

तब.....

आशाओं के दीप,
दीपों की ऊर्ध्वमुखी लौ
मेरी दहलीज़ को प्रकाशित करती,
विह्वल मन:स्थिति में भी
मेरे मुखमण्डल पर
उजली से मुस्कान खिलती।
हँसते-गाते तय कर लेती
टेढ़े-मेढ़े-विचित्र से रास्तों को,
कभी सुलझा लेती,
कभी यूँ ही छोड़ देती उलझनों को।
पहाड़ों की ऊँचाइयाँ,
सागर की गहराइयाँ,
लभ्य लगने लगतीं,
बहुत सरल लगने लगतीं।

जब...
मेरे घर की दीवारें
प्रेम से पगी ईंटों से निर्मित होतीं
मेरे आँगन में तुलसी महकती,
मेरे परिवार में सब साथ मिलकर
सुख-दु:ख बाँटते...

क्योंकि बांटना ज़रूरी है...
बिन अपनों के साथ के
सारी आशाएँ,
सारी उपलब्धियाँ,
सारे सपने,
सारे अपने,
सब अधूरे हैं......
सब अधूरे हैं।

द्वारा - कु. आयुषी (कक्षा- 12 'स')
केन्द्रीय विद्यालय NER, बरेली

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

TWEET MESSAGE

My lockdown experience has been very varied. When we were told that schools were closing and I wouldn't get the chance to sit for my NTSE exams, I felt a mix of emotions. I was annoyed that all my hard work was in vain. After a while, the reality sunk in and I realized I would have to make the most of the situation. On the last day of school, I spent time with my friends and saying goodbye to our teachers. We discussed the impact of the situation and realized it was for the best and for our own safety. I was upset because as a class group, we wouldn't get to achieve all the milestones and get to experience the finality of completing secondary school. The first day of lockdown just felt like a normal day off. Gradually, I was getting extremely bored. My family decided to take up some charity work. We joined an NGO called VSSCT run by Devki Nandan Thakur. It provides health facilities to the poor children.

As I was largely house bound, I decided to take up some new hobbies. I've always had a passion for cooking and baking and this was the perfect opportunity to try new things. I ended up using so much flour and eggs! In the end it was a creative learning experience and a change for me as well. This is one of the few things I enjoyed during lockdown. I also enjoyed the fact that I got to spend more time at home with my brother playing various sports every day in the garden. However a major loss that rankled was the inability to go to school and meet our teachers and friends. The things that have helped in lockdown are tremendous support from our school teachers boosting us for our upcoming board exams. When Practice Pre-board examinations were announced, I was worried regarding my performance as our written practice and speed of writing had rusted. Herein I further realized the concern of our teachers when they give us sample papers to practice. At last I want to say that though we managed to come out unscathed from this experience; I also pray to almighty that this should be our last lockdown because no one in the world will again want to suffer this pandemic again

Thank you

Anshuman Singh (10th C)

Kendriya Vidyalaya Dilkusha Cantt, Lucknow U.P

LOUSY LOCKDOWN LANES….

Roads Locked, Everyone’s Shocked!
Unprecedented situation,
Minds filled with tension;
Inhabitants are stressed,
Everywhere is a mess!
What to do? Have nothing to say;
Getting dressed up, but not going anywhere
Streets are vacant, no one’s there
This covid is an eyesore;
No lockdown anymore!
Been so long not been to school,
Sitting at home like a fool!
Desultory studies;
So many worries,
Ineffable condition, hard to find any solution.
Missing the classroom, everything’s going online
Save us from this disastrous evil, Oh My Divine!
Smiles are hidden behind the mask
Maintaining social distancing is a hectic task,
Dying to meet all my friends;
Sorry! I can’t ‘coz I’m following #covid19 trends!
Salute to all the teachers,
Who toiled for us, caring for our future!
Google Meet became our classroom,
For the first time we were attending the classes
In our Bedroom!
But no matter whatever goes on,
Nothing can stop us, KVians will always move on!

Yashika Sharma (XI-A)

Pandemic Experience

When the month was March
At that time I was fully charge
Suddenly, we got news
And I became fully fuse
When we were told that
You should keep inside the gate
It started affecting our persona
Everyone just wanted to eliminate corona
With nothing to do the days unfold
Feeling stress and so much bored
But with whole family together
Keeping safe was all that mattered
I couldn't celebrate my birthday in November
That thing I will always remember
Because of this cursed pandemic
Don't know how many souls
Missed their goals
Why teachers are revered
That thing we understood
To go to school is not a profession
It is just a hunger or call it a passion.

Raunak Singh
KendriyaVidyalaya IFFCO Aonla, Bareilly

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

A PUZZLE

"I stay home in a bubble
Do puzzle and play
Stay out of trouble
Make use of day"

I can play on a tramp
Ride my cycle all day too
Read a book, play a card game
I think I'll get through

Hang on just a minute
A device did you say?
That's sounding more it like.
Just stay home and play.

What happened to screen time
Too much wasn't it good
Still I think I'll be happy
To stay in my hood

So mum do you reckon
I can use your I pad
Or maybe your laptop?
Things wasn't so bad.

In all this confusion
I've learnt something new,
Devices aren't vices
They help us learn too.

Anugya Singh (Class IX A)
Kendriya Vidyalaya AFS BKT, Lucknow

PHOENIX: TO RISE FROM THE ASHES…..

The following is a fictitious representation of the nobility and sacrifice associated with medical profession. The corona war indeed saw a lot of casualties…and the warriors at the forefront were the medical professionals, the health care workers who sacrificed their own well -being and were also the torch bearers….the harbingers of hope. Damon Salvatore represents the quintessential medical man who strives to spread hope and health around him.

DEATH SPEAKS At night, in winter, when the snow-flakes fall slowly from heaven like great white tears, I raise my voice; its resonance thrills the cypress trees and makes them bud anew. I pause an instant in my swift course over earth; throw myself down among cold tombs; and, while dark-plumaged birds rise suddenly in terror from my side, while the dead slumber peacefully, while cypress branches droop low over my head, while all around me weeps or lies in deep repose, my burning eyes rest on the great white clouds, gigantic winding-sheets, unrolling their slow length across the face of heaven. How many nights, and years, and ages have I journeyed thus! A witness of the universal birth and of a similar decay; Innumerable are the generations I have garnered with my scythe. Like God, I am eternal! The nurse of Earth, I cradle it each night upon a bed both soft and warm. The same recurring feasts; the same unending toil! Each morning I depart, each evening I return, bearing within my mantle's ample folds all that my scythe has gathered. And then I scatter them to the four winds of Heaven!

Damon Salvatore woke with a start to face the first light. Rain tapped against the glass. It was December the tenth.
He looked across the table on which a night-light had guttered into a pool of water. On the bed beside him, Stefan Salvatore was still asleep, and Damon lay down again with his eyes on his brother.
Stefan turned suddenly upon his back and threw an arm across his face, blocking his mouth. Damon's heart began to beat fast, not with pleasure now but with uneasiness. His brother was having a nightmare. He sat up and called across the table, "Wake up."
Stefan's shoulders shook and he waved a clenched fist in the air, but his eyes remained closed. To Damon the whole room seemed to darken, and he had the impression of a great bird swooping. He cried again, "Wake up," and once more there was silver light and the touch of rain on the windows.
Stefan rubbed his eyes. "Did you call out?"' he asked.
"You were in a bad dream," Damon said. Already experience had taught him how far their minds reflected each other. But he was the elder, by a matter of minutes, and that brief extra interval of light, while his brother still struggled in pain and darkness, had given him self-reliance and an instinct of protection towards the other who was afraid of so many things.
"I dreamed that I was dead", Stefan said.
"What was it like?" Damon asked.
"I can't remember, but it felt cold", said Stefan
"You dreamed of a big bird."
"Did I?"
"You have to go to the hospital" said Stefan.
"I don't want to go," Damon said suddenly. "I suppose Doctor Joyce will be there."
"What's the matter?" Stefan asked.
"Oh, nothing. I don't think I'm well. I've got a cold. I oughtn't to go to the hospital."
Stefan was puzzled. "But Damon, is it a bad cold?"

"It will be a bad cold if I go to the hospital. Perhaps I shall die."
"Then you mustn't go," Stefan said.

Damon got a call from the hospital that there was an emergency. He picked up his things and rushed through the door.

“It’s an emergency”, said Damon.
Damon was one of the best doctors in the hospital. He checked the patient, his blood pressure was increasing, and the patient told him that he had fever, dry cough, was always tired, and suffered aches and pain, loss of taste and smell. Damon had not witnessed such kind of symptoms before. He gave him a few medicines and told him to rest, drink plenty of fluid, eat nutritious food, stay in a separate room from other family members, and use a dedicated bathroom if possible and advised him to clean and disinfect frequently touched surfaces.
The patient was discharged. Damon was in a melancholic mood.
One week later, he got a very serious patient with almost the same symptoms, fever, headache, rashes and high blood pressure but this time the only difference was that the patient was dying, he was lacking oxygen in his body.
“Oxygen mask, hurry!” he said,
But that was of no use now, it was already too late. The patient died in his arms.
Damon felt disappointed and broken that he was not able to save a human life.
Two months later Dr. Edward Cullen, who was the head doctor and the owner of the hospital came for a visit, because now the deadly disease covid-19 had spread worldwide. A meeting was held by Dr. Cullen for the doctors and staff members of the hospital for awareness on corona virus pandemic. He told them about the symptoms and precautions. Then he told them the ugly truth, that there was no vaccine yet and they had to prepare their minds for what was going to happen.
Months passed. Weeks felt like a day and a day felt like an hour. Thousands of new cases every day. Millions of people dead. The WHO declared covid-19 as a global pandemic and warned the people that the worst was yet to come. The whole world was in Lockdown.
Damon usually stayed at the hospital now, even slept there. He visited Stefan less because he knew that he had to take some precaution, Stefan was the only family he had. He had to take care of him. Therefore he sent him away to New Zealand, where last of its corona virus patients had recovered with its health officials saying there were no active cases of Covid-19 in the country.
There was no cure to this yet but the doctors found a way to revive the patients.
A whole year passed, things started to get quite normal, less cases now, more cars on the road, people on the streets, schools and offices open, no more work from home now. The scientists found a vaccine which was on trial.
Damon finally got home and he went for a walk near the seaside. “It’s been a tough ride” he thought. The waves of the water were high. Near the seashore there was a little girl who scribbled on the sand the words APOCALYPSE, and then the waves came and wiped away her scribbling.
Damon smiled as he thought that it was perhaps a sign given by the universe that it’s just the beginning. The worst is over…we shall all live.

Minza Khan (XI B)
Kendriya Vidyalaya RDSO, Lucknow

WITHIN 18 DAYS

Beneath the slightest hope,
In the life full of slopes,
We knew a day would come,
When all the memories will be a blur,

Missed will be her beautiful smiles,
The hue of her pretty brown eyes
Or maybe those wrinkles on the corner of her eyes

The bright colours she'd loved to wore,
The sounds of her footsteps down the floor. . .

'Cause within 18 days
A bird would fly,
Without any goodbyes,
Flying higher and higher in the sky

Wish, I'd be a little bird too,
Wondering in the sky full of blue
I would chase her,
I swear I would . . .

But, there's nothing I could do
When it's the cruel, inevitable truth

That, within 18 days
A bird would fly,
Away from all the people she loved, she knew
She would fly up higher in the sky

Curse the monster lingering in air,
Died a million
_ mothers, fathers, aunts, uncles,
Oh heaven, even the infant are in fear.

Corona . . . Corona
Yes, that's the name!

Killed her kidney, it injured her heart
And now?
Now it's too late for the awaited cure,
Too late for the slightest hope…

Its's time to bid her goodbye
Knowing the truth_ we weep, we cry
I'd hate to break it up to you, oh god
_But her time had come

'Cause within 18 days
A bird would fly,
Take care of her, I beg you,
Her soul's serenity is now up to you.
'Cause within 18 days
A bird would fly,
Somewhere higher and higher in the sky. . .

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Aastha Mehra (XI B)
Kendriyavidyalaya, IFFCO Aonla Bareilly

MY EXPERIENCES DURING COVID-19

The COVID-19 Pandemic was not an absolute curse to the world but the lockdown period has proved to be a bliss to mother earth. It recovered its beauty and health during the time when, we, the biggest victims were not allowed to come out of our homes.

This taught us that the values like discipline, compassion, care, help are incredible. I also learnt to work with minimum resources … moreover I enjoyed those challenges …. How to give my best when I was not allowed to go to the school … how to relish the recipe which my mother had experimented with the help of everyone at home…. Going up and down the stairs to keep myself fit as I was not allowed to go to play outside. Cleaning the tiles, furniture, cutting and trimming of plants, painting my shelf , folding my clothes , kneading the dough is all what I learnt during that time. But what I really enjoyed is watching Ramayan and Mahabharat on T.V. with my grandparents.

I would like to thank that period of my life which taught me so much which I couldn't have learnt otherwise.

Akshunn Pathak (Class IX A)
Kendriya Vidyalaya No.-2 JLA.Bareilly Cantt

EXPERIENCE DURING COVID ERA

I had got exposure about disputes and conflicts between some most important subjects during this time period. The conflicts are too much, such as Economy vs Ecology, Jobs vs Startups, (Capitalism) Privatization Vs (Socialism) Nationalization etc. Between these disputes the major dispute raised was Economy vs Ecology which affected the nation and individual with same force. How? Let's look.

When you'll get out of your house, just think what you saw. Buildings, home, cars, people, street animals, roads etc. Nothing different. All these things increase economy or strength nation's reputation on global stage. But what about ecology and nature. Now think, how many trees you saw? How many street animals you saw? They would be in an area less than area acquired by humans for setting factories. Why? To strength economy. All these things did by humans should be helpful in nation's growth but is it helpful in growth of nature as well.

That's why when nature believes it isn't getting the required importance, it shows it's existence drastically. Like in Covid Era when every human was locked in house pollution decreased, animals got free, air became fresh etc. And this is not for the first time. Same scenarios happened during swine flu, ebola spread etc.

Nation and nature need same respect.

Hemang Saxena (Class 9 B)
Kendriya Vidyalaya AFS BKT, Lucknow

THE WAR FOUGHT WITH INVISIBLE AMMUNITION

The year was 2020.World War III had started. But this war was not among the countries of this world, instead it was between human and the obliterator of a human!. The obliterator had come with his full might and the human was caught unawares with little or no acquaintance of this enemy- a microscopic virus that threatened to annihilate the whole world. He had decided to come upon the neighbor country- China first. As soon as he came there, he presented a glimpse which was just the tip of the iceberg. But no one still could recognize him as he had been configured in such a subtle manner that a scientist treated it as a thing as ordinary as an infection. Within a few months he had possessed not only the city in which he had originated, but also the entire country. After taking stock of the unprecedented situation in the country China, the utmost authority there decided to inform everyone of this unseen problem. The entire world got to know that something very dangerous, and quite mysterious was here to be dealt with. Over the next few weeks it started spreading from one country to the rest of the world. Scientists soon revealed the structure of the virus-there was a CROWN on his body! Now this enemy was named COVID 19. But the biggest thing was yet to be revealed, i.e. none knew the physic of this enemy.

A panic was precipitated when a complete ban was imposed on people coming out of their houses. Mankind got scared and many started moving from where they were to their native places and this movement conveyed him to our verdant country also. Many severe restrictions were imposed like no one was allowed to form a gathering, none was allowed to go out of the house etc, but our enemy did not know that we humans are insurmountable when it comes to our lives and those of our dear ones.

He planned to destroy a child by not letting him attend his school, but he underestimated our teachers who ensured that only the schools were closed not the doors of learning. For the first time he was defeated and secondly his spread came down drastically when we charted out a covid protocol-of mask, social distancing and sanitization. This was his second defeat. He was of the opinion that people would perhaps die from malnutrition but here too the virus was defeated. A few generous Samaritans proved that humanity was still alive by distributing food grains to the needy. A board was put up with phone number and address to be contacted by the needy. His defeats became more frequent. The biggest setback came when the doctors along with medical staff worked tirelessly at the hospital treating corona positive persons. Those who wanted to get back to their homelands were given special trains. The police were constantly helping the citizens and were ready to buy groceries from the markets to decrease the movement of people outside. They were constantly on duty without even visiting their own families. It has been a year since this war started and in the new year everything reopened with full safety measures. Although lakhs of people across the world lost their lives but now everything is hopefully returning to a sense of normalcy.

Uzaid Ullah Khan (IX B)
Kendriya Vidyalaya Lucknow Cantt

THE TIMES OF SCHOOL

How tiring and exhausting it was to go to school and to spend almost seven hours in sheer boredom. I didn’t like school ever, and school examination time was the worst time for me. Nothing was more boring than the monotonous routine of regular school. The worst scenario was when the sports coach was absent and a subject arrangement followed for the Games period. During the final examination of ninth standard, I prayed to God to postpone my examination, and never have I more resented the wish. When the lockdown had lasted for about a month, the feeling of euphoria was still there.. Now, no more early wake-up, no more early bath, and no more school, all the days were mine and I could do whatever I wanted. The covid-19 epidemic had turned into a violent pandemic. The introduction of online classes worried me a little but I thought it was better than attending daily school. Days went on with enjoyment and enthusiasm. But gradually I started to feel listless, lethargic, and bored despite possessing all things to entertain myself like phone, television, headphone, and much more. But for some inexplicable reason, even these were not able to entertain me. Now the online classes started to frustrate me. The relaxing sleep of 'after school' had gone. My eyes seemed as though they were becoming smaller and smaller every second. My legs were urging me to run, to play. My ears were desirous of listening to the funny banter of the classroom. I realized, that the reason for my condition was the closure of the school and I found that I wasn’t able to resist the temptation of going to school which kept me active and energetic. I realized that Covid 19 pandemic had taught me not only the importance of hygiene and sanitization but also the importance of school, teachers, and friends in our life. Then I wished to God that never should this painful and distressing time come on earth again and I should enjoy my days of schooling once again.

Anuj (Class-10 ‘B’)
Kendriya Vidyalaya IIT Kanpur

COVID-19 PANDEMIC

Corona virus which is commonly called as COVID-19 is an infectious diseases which cause illness in the respiratory system in the humans it is the new virus that is impacting the whole world badly as it is spreading primarily through contact with the person.

COVID-19 was first identified during December 2019 in Wuhan city of China. In March 2020, the world Health organization (WHO) declared the COVID-19 is now a cause of large number of deaths across the world. Till now, proper vaccine has been developed for treatment of this disease.

HOW DOES COVID-19 SPREAD - it spreads from person to person among those in close contact with an about (6 feet or two meters) the virus is spread by respiratory droplets generated from the covers needs of a covid-19 patient.

SYMPTOMS - covid-19 symptoms can be very mild to severe. Some people have no symptoms are fever, dry cough and breathing problem. Apart from this symptoms like fatigue, sore throat, muscle pain and loss of taste or smell can also seen corona virus patients.

PREVENTION OF COVID-19 - (a) Wash hands regularly with soap or sanitizer.

(b) Avoid unnecessarily outings on public places.

(c) Maintain a distance of at least 5-6 feet from a sick.

(d) Maintain proper hygiene and symptoms.

(e) Cover your nose and mouth while coughing or sneezing.

(f) Avoid touching your eyes, nose and mouth.

(g) Wear mask.

Km. Mahi Sharma (Class - 7 A)
Kendriya Vidyalaya AFS BKT, Lucknow

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

LEARNING EXPERIENCE DURING COVID -19

COVID 19, the most dangerous word of my life until now and forever (I Pray), this pandemic will be remembered in the word of Dickens, as "The worst of time and in the most unique unintended ways the best of times." For me as a student the challenge was to maintain the pace of my learning. Virtual platforms were introduced, I was excited to try it but being a teen age boy it was difficult for me to focus on my studies, and that when I had a mobile phone in my hand. Even if I would use it for a day continuously no one would say anything to me because in their view I was studying. In the first few days I would just spend my days scrolling through social media, watching shows etc. but one day during my online class my teacher asked some questions to all the students who were attending the classes regularly. But most of the time I would just mute my mic and let the class run "In background." But on that one day when my teacher was asking questions most of the students were able to answer leaving some exceptions including me. My teacher asked each of us why we were not able to answer such easy questions. I thought when I have not even studied anything then how couldI answer. My teacher called out my name "Abdullah" and said "Unmute your mic". I was thinking, what can she do to me, nothing, she can just scold me. But my teacher said, "Abdullah, what happened to you, you were not like that. You are one of those students who are supposed to score good marks, and probably answer every question." I was speechless. This was not what, I was expecting. These lines just hit me very hard. I felt like this is the biggest mistake I have ever made and I realized that the person I am trying to fool is myself. From that day I am trying to bring my old self back. Somewhere inside me, I knew that it was going to be very tough to do it but I guess strong belief can break mountains and I was right. Later in the session when the half yearly exams were conducted, I scored good marks in my half yearly exam and was appreciated by my teachers. And now I am preparing myself for the next step.

Abdullah Usmani Class XI,
Kendriya Vidyalaya Barabanki

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

CORONA: CURSE OR BOON

Sitting in my room, I was looking at the ceiling,
Trying to guess, what everyone was feeling?
We are locked in our rooms for our safety,
From mighty Corona, to which the world is kneeling.

It is something new, for me, for you, for us,
An exotic moment, where no one is in rush.
O late Pablo Neruda! Your words have come true,
'Keeping Quiet", Not moving our arms so much.

Corona has locked humans, but helped the nature,
Helping it from the human-caused-dangers.
Increasing its hold over the land and the seas,
And there are returning, it's flora, fauna and endangered creatures.

We all know that this time will end, sooner or later,
It may be a curse for humans, but it's a boon for the nature.

Pankaj Kumar (Class - 12th C)
Kendriya Vidyalaya NER Bareilly

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

LEARNING EXPERIENCE IN VIEW OF COVID-19 PANDEMIC

Lockdown had been implemented worldwide due to corona virus epidemic, which led to the shutdown of all services except the country's emergency services. All companies, factories, shops, transportation, domestic and international flights were closed. Even the school, college had also been closed. The government issued a directive that employees of all companies should work from home and instructions were issued to the school, college teachers that all the students be taught online from home till the situation becomes normal so that the future of the student does not deteriorate and they can continue their studies.

Our school had been completely closed for the last 8 – 9 months due to growing epidemic of corona virus in the country. The government had directed that during the lockdown of the school , the teacher should teach us from home so that all of the students can continue their studies from home . I am very thankful to the government and authorities of Kendriya Vidyalaya Sangathan (New Delhi) .

My studying at home with the internet was my first experience and this experience proved to be very beneficial for me. Because my online classes were convenient for me. They allowed me to take additional classes. There are many benefits of taking online classes for a student, such as saving money, saving time and getting the best facilities at home . And all these things became possible only because of our school principal and our hardworking teachers of my school. And this became effective and really easy because of different online platforms such as Google classroom, Diksha and My CBSE Guide etc.

Many teachers did not have complete knowledge about using technology but they had tried their best to resolve all the problems of each and every student. Not only studies, our school also gave us opportunity for other curricular activities like debate, poster making, yoga, running and other competitions. So, in online classes we had learned a lot of new things and we had a great experience.

Km. Meenakshi (Class 12th C)
Kendriya Vidyalaya No.- 1 Armapur, Kanpur